# [LEARNING THEORIE BEHOVIOR, SOCIAL COGNITIVE AND HUMANISTIVE]

## * अधिगम का सिद्धान्त का वर्गीकरण [Classification of theory of Learning]

सीखने का सिद्धान्त चार प्रमुख भागों में बाँटा गया है।
① व्यवहारवादी अधिगम सिद्धान्त।
② संज्ञानात्मक अधिगम सिद्धान्त।
③ समाजिक अधिगम सिद्धान्त।
④ मानववादी अधिगम सिद्धान्त।

### ① व्यवहारवादी अधिगम सिद्धान्त :—

अधिगम के व्यवहारवादी सिद्धान्तों को अधिगम के (सम्बन्ध + वादी) सिद्धान्त भी कहते है। तथा इस वर्ग के सिद्धान्तो वस्तुत: सीखने की प्रक्रिया को उद्दीपक और अनुक्रिया के बीच संबंध या बन्धन बनाने के रूप में स्पष्ट करते है। वस्तुत: संबंधवादी सिद्धान्त मनोविज्ञान के व्यवहारवादी से प्रभावित मनोवैज्ञानिको द्वारा प्रतिपादित किये गये है।

### ② संज्ञानात्मक अधिगम सिद्धान्त :—

संज्ञानात्मक सीखने की प्रक्रिया में उद्देश्य समझ तथा सूझ की भूमिका पर ~~अधिक~~ अधिक बल देता है। संज्ञानात्मक सिद्धान्त गैस्टॉलत सम्प्रदाय और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान से प्रभावित मनोवैज्ञानिको द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

### ③ समाजिक अधिगम :—

इस सिद्धान्त का केन्द्रिय तथ्य यह है कि बाल या व्यक्ति का विकास मुख्य रूप से उसके समाजिक अधिगम का परिणाम है। समाजिक अधिगम में व्यक्ति के समाजिक परिवेश की भूमिका महत्वपूर्ण होती है जैसे - बालक अपने माँ - बाप, भाई - बहन, पड़ोसीयों साथियों और गुरुजनों के व्यवहारों का अवलोकन करता है।

### ④ मानववादी अधिगम सिद्धान्त :—

मानववादी वह वाद है जो सम्पूर्ण रूप से मानव केन्द्रित है मानववादी से तात्पर्य मानव की रुचि आवश्यकताएँ, धार्मिक स्वतंत्रता और जीवन में उचित समायोजन प्राप्त करना है मानववादी के अनुसार स्वयं मानव ही अपने कार्य को पूरा कर भाग्य का निर्माण करता है।

अधिगम के अनेक सिद्धान्त प्रतिपादित किये है जो उपरोक्त प्रकारो के अनुसार निम्न वर्गों में रखा गया है। इस प्रकार मनोवैज्ञानिको ने

# सीखने का सिद्धान्त
## Theories of Learning

| ① उद्दीपन अनुक्रिया सिद्धान्त (Stumulus Responuse Theory) | ② शास्त्रीय संज्ञानात्मक सिद्धान्त। (Classical Cogenitive Theory) | ③ आधुनिक समाजिक अधिगम सिद्धान्त। (Modern, Social Learning Theory) | ④ अभिप्रेरक अधिगम सिद्धान्त (Motive Learning theory) |
|---|---|---|---|
| ↓ | ↓ | ↓ | ↓ |
| व्यवहारवादी अधिगम सिद्धान्त (Behoriourist Learning Theory) | संज्ञानात्मक अधिगम सिद्धान्त (Cognitive Learning Theory) | समाजिक अधिगम सिद्धान्त (Social Learning Theory) | मानववादी अधिगम सिद्धान्त (Humanistive Learning Theory) |
| ↓ | ↓ | ↓ | ↓ |
| पुनर्बलन अधिगम सिद्धान्त (Rainforcement Learning Theory) | अर्न्तदृष्टि का सिद्धान्त (Theory of Learning Insight) | क्रियात्मक पुनरावृत्ति (Motoric Reproduction) | उत्तेजना अधिगम सिद्धान्त (Stumulus Learning Theory) |
| ↓ | कोहलर, कोफ्का, पिआजे इत्यादि। | बुनर, वैण्डुरा इत्यादि। | मैकडुगल, अब्राहम, मैस्लो |
| थार्नडाईक, स्किनर, पावलॉव हल इत्यादि। | | | |

## * अलबर्ट बन्डुरा का सामाजिक अधिगम का सिद्धान्त :—

### Concept :—

इस सिद्धान्त का केन्द्रिय तथ्य यह है कि बालक का विकास मुख्य रूप से उसके सामाजिक अधिगम का परिणाम होता है। सामाजिक अधिगम व्यक्ति के सामाजिक परिवेश की भूमिका महत्वपूर्ण होती है बालक अपने माँ बाप, भाई बहन, पड़ोसियो, साथियों व गुरूजनो के व्यवहारों का अवलोकन करता है। और भविष्य में मूल रूप से दुहराने की कोशिश करता है। इस संदर्भ में हल, मिलर, डोलार्ड, थार्नडाइक, स्किनर तथा बन्डुरा के नाम विशेष उल्लेखनीय है। सामाजिक परिस्थितियों में बालक कैसे सीखता है इस दिशा में बन्डुरा द्वारा किये गए अध्ययन और उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त विकासात्मक मनोविज्ञान में महत्वपूर्ण स्थान रखते है और बालक के व्यवहार विकास की समीक्षा भली-भाँती करते है।

### History :—

1955 और 1965 ई० के बीच बन्डुरा और वाल्टर्स ने इस तथ्य को उजागर किया कि बालक अधिकांश व्यवहारों, सामाजिक परिस्थितियों में सीखता है बन्डुरा के सिद्धान्त को सामाजिक अधिगम, अवलोकनात्मक अधिगम और अनुकरणात्मक अधिगम के नामो से जाना जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार बालक अपने सामाजिक परिवेश में प्राय बड़ो या महत्वपूर्ण व्यक्तियों के व्यवहारो का अवलोकन या अनुकरण करता है बालको द्वारा दुसरों की क्रियाओं का अनुकरण भी सामाजिक अधिगम है।

सामाजिक अधिगम एक अत्यन्त सरल प्रक्रिया है इसमें न तो किसी पुरस्कार या दण्ड की आवश्यकता पड़ती है और न ही सीखने वाले व्यक्ति को अभ्यास की जरूरत पड़ती है। सामाजिक अधिगम में बालक को अपने परिवेश में किसी वयस्क व्यक्ति या किसी साथी के व्यवहारों और उनके परिणामों का क्रमानुपूर्वक अवलोकन करना पड़ता है।

## * अलबर्ट बन्डुरा के मूलभूत सम्प्रत्यय :—

अलबर्ट बन्डुरा ने अपने सामाजिक अधिगम सिद्धान्त में कई सम्प्रत्यय का प्रयोग किया है जो उनके सिद्धान्त को समझने में उपयोगी सिद्ध हुए है। कुछ प्रमुख सम्प्रत्यय नीचे दिए गए है।

1. अवलोकन (Observation)
2. अनुकरण (Imitation)
3. तदात्मीकरण (Identification)
4. नमुना / प्रतिमान (model)
5. मॉडलिंग (modeling)

उपरोक्त प्रमुख सम्प्रत्यय के आधार पर सामाजिक परिस्थितियों में जिस व्यक्ति के व्यवहारों का अवलोकन और अनुकरण किया जाता है। उसे बन्डुरा ने मॉडल की संज्ञा दी।

बड़े भाई-बहन, पाठशाला में अध्यापक, मित्र मंडली में साथी, परिवार में माता-पिता कार्य क्षेत्र में

अधिकारी सामाजिक कार्यों में नेता मनोरंजन के क्षेत्र में अभिनेता तथा इतिहास में महान पुरुष बालक के लिए मॉडल का कार्य करता है।

⇒ किसी मॉडल के व्यवहारों को ध्यान पूर्वक देखना और उन्हें मस्तिष्क में संचित करना अवलोकन की प्रक्रिया है।

⇒ अवलोकन व्यवहार में मूल रूप में दुहराने को अनुकरण कहा जाता है उसे पुनरावृत्ति भी कहा जाता है।

अधिकांश सामाजिक परिस्थितियों में बालक किसी व्यक्ति की क्रियाओं का केवल अनुकरण ही नहीं करता बल्कि उसके गुणों और व्यवहारगत विशेषताओं को स्वयं अपने भीतर विकसित करने का प्रयास करता है। इस प्रक्रिया को तदात्मीकरण कहा जाता है।

बन्दुरा ने तदात्मीकरण के स्थान पर माडलिंग पद का उपयोग किया है जिसका अर्थ है मॉडल के अनुरूप बनना या उसकी विशेषताओ अपने भीतर विकसित करना। यहाँ ध्यान देने योग्य बात है कि मॉडलिंग मात्र अनुकरण ही नहीं उसके आगे की प्रक्रिया है।

* Q-1 समाजिक अधिगम में सहायता देने वाले कारक :—

किसी मॉडल की क्रियाओं का सकल अनुकरण कई बातों पर निर्भर होता है। इसके लिए जो प्रक्रिया आवश्यक है उन्हें निचे दिया गया है।

(1) ध्यान (Attention)
(2) अवलोकित तथ्यों का संचय (Re-Attention)
(3) क्रियात्मक पुनर्वृत्ति (Motoric Reproduction)
(4) अभिप्रेरणा (Motivation)
(5) प्रबलन (Reinforcement)

(1) ध्यान (Attention) :—

अनुकरण द्वारा सफलतापूर्वक सीखने के लिए मॉडल की क्रियाओं पर ध्यान देना आवश्यक है ध्यान की सहायता से उसके व्यवहार की विशेषताओं को पहचाना जा सकता है।

(2) अवलोकित तथ्यों का संचय :—

मॉडल की व्यवहार के सकल अनुकरण तथा मॉडलिंग के लिए ध्यान की क्रिया के साथ ही संचय की क्रिया भी आवश्यक होती है। मॉडल के भीतर जिन क्रियाओं तथा तथ्यों एवं विशेषताओं का अवलोकन किया जाता है। उनको संचित रखना इसलिए आवश्यक है जिससे उनकी सही पुनरावृति की जा सके।

(3) क्रियात्मक पुनरावृति :—

अवलोकित व्यवहार को सीखने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी पुनरावृति की जाय जबतक मॉडल के क्रियाओं को बालक स्वयं नहीं दुहरायेगा तबतक वह उन्हे अर्जित नहीं कर सकता है।

④ अभिप्रेरणा :—

समान्यरूप से कहा जा सकता है कि हर प्रकार के सीखने में किसी न किसी रुप में और किसी न किसी सीमा तक अभिप्रेरणा आवश्यक है। अभिप्रेरणा के कारण किसी सीखे हुए व्यवहार में निरंतरता बनी रहती है समाजिक अधिगम में व्यक्ति मुख्य रुप से आंतरिक पुनर्बलन के कारण अधिक अभिप्रेरित होता है और मॉडल के व्यवहारों का ध्यान से अवलोकन और अनुकरण करता है।

⑤ प्रबलन :— समाजिक अधिगम में सहायता देने वाला अंतिम कारक प्रबलन है।

शर्ते :—

बन्डुरा ने अपने कई अध्ययनों में पाया कि बच्चे केवल उन्ही व्यक्तियों के साथ अपना तदात्मयीकरण स्थापित कर पाते है जो उन्हें प्यार - दुलार देते है। और उनकी आवश्यकता को ~~समझ~~ समझते है ऐसे मॉडलों को बन्डुरा ने नर्चरैन्ट मॉडल कहा है तीरस्कार करने वाले माँ - बाप के गुणों बच्चे कभी नही ग्रहन कर पाते है जो माँ - बाप बच्चों की समस्याओं का हल प्रस्तुत करते है। वे ~~समझ~~ सक्षम मॉडल माने जाते है और उनकी व्यवहारगत विशेषताओं बच्चे अधिक तत्परता से सीख पाते है।

H.W Q.-1 कक्षा में समाजिक अधिगम से आप क्या समझते है। कक्षा में इसकी प्रक्रिया का वर्णन किजिए।